Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किशोरावस्था की समस्याएं व समाधान

डॉ. बबीता*

* सहायक आचार्य (समाजशास्त्र)श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर (राज.) भारत

शोध सारांश – किशोरावस्था मनुष्य के जीवन के विकास क्रम में बचपन से वयस्क जीवन के मध्य की अवस्था है। इस अवस्था में किशोर तीव्र गति से शारीरिक, मनोवैज्ञानिक व संज्ञानात्मक विकास का अनुभव करता है। यह मनुष्य के जीवन में परेशानी, तनाव, तूफान व सघंर्ष की अवस्था है। यह अदृश्य यौन लक्षणों से प्रजनन परिपक्वता के स्वरूप द्वारा परिवर्तन एवं विकास की अवस्था है, जो कि संम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक तथा भावनात्मक व सापेक्ष रूप से स्वतंत्रता का परिवर्तन काल है। परिवर्तन की इस अवस्था के दौरान किशोर वर्ग कई प्रकार के जटिल मुद्दों, लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, गर्भ धारण, प्रजनन व प्रसव के दौरान अनेक प्रकार की कठिनाइयों का अनुभव करते हैं। तथा प्रजनन व यौन स्वास्थ्य की समस्याओं को बढावा देते हैं। किशोरियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक कुपोषण है।

शब्द कुंजी –किशोरावस्था, स्वास्थ्य, कुपोषण, किशोरियां, प्रजनन मूलक, संज्ञानात्मक विकास।

प्रस्तावना –संसार महिला एवं पुरूष के संयोजन से चलने वाली एक व्यवस्था है। जिसमें महिलाओं का स्थान एक प्रजनन मूलक परिवार की स्थापना करने में पुरूषों से और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रत्येक महिला को जीवन यापन करने, दैनिक कार्य करने, उच्च स्वास्थ्य, स्वस्थ समाज एवं सुरक्षित मातृत्व हेतु सन्तुलित आहार की आवश्यकता होती है। सम्पूर्ण विश्व में महिलाऐं सर्वाधिक कुपोषण की शिकार होती हैं। यह कुपोषण इनमें मात्र एक दिन की परिणति नहीं है वरन् बाल्यकाल और प्रमुखत: किशोरावस्था से देखने को मिलता है।शाब्दिक दृष्टि से देखा जाए तो किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Adolescence का हिंदी रूपान्तरण है। एडोलसेंट शब्द लेटिन भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ हैं बढना या विकसित होना है। यह मनुष्य के जीवन का बसंत काल माना जाता है। यह 10 से 19 वर्ष की आयु के मध्य रहता है। यह काल सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का महत्वपूर्ण समय है। जिसमें अनेक शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक परिवर्तन होते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 'किशोरावस्था 10 से 19 वर्ष की आयु में बचपन व वयस्कता के मध्य की अवस्था है। यह मानव के विकास का अनुठा चरण है। जब एक अच्छे स्वास्थ्य की नींव रखी जाती है इस समय किशोर तीव्र गति से शारीरिक मनोवैज्ञानिक व संज्ञानात्मक विकास का अनुभव करते है। इस दौरान वे कैसा महसूस करते हैं एवं किस प्रकार से सोचते हैं।'[1]

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन के विकास क्रम में बचपन से वयस्क जीवन के मध्य की अवस्था है। इस अवस्था में किशोर तीव्र गति से शारीरिक, मनोवैज्ञानिक व संज्ञानात्मक विकास का अनुभव करता है। यह मनुष्य के जीवन में परेशानी, तनाव, तूफान व सघंर्ष की अवस्था है। यह अदृश्य यौन लक्षणों से प्रजनन परिपक्वता के स्वरूप द्वारा परिवर्तन एवं विकास की अवस्था है, जो कि संम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक तथा भावनात्मक व सापेक्ष रूप से स्वतंत्रता का परिवर्तन काल है। परिवर्तन की इस अवस्था के दौरान किशोर वर्ग कई प्रकार के जटिल मुद्दों, लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, गर्भ धारण, प्रजनन व प्रसव के दौरान अनेक प्रकार की कठिनाइयों का अनुभव करते हैं तथा प्रजनन व यौन स्वास्थ्य की समस्याओं को बढावा देते हैं। किशोरावस्था को जीवन के एक स्वस्थ चरण के रूप में माना जाता है। इसके उपरान्त भी इस अवस्था में मृत्यु, बीमारी, चोट व हिंसा, कुपोषण तथा मादक पदार्थों का उपयोग आदि अनेक कारक किशोरावस्था को नुकसान पहुंचाते हैं। इनमें से अधिकतर कारक रोकथाम योग्य हैं। इस अवस्था में किशोर अपने भोजन, आहार–व्यवहार, शारीरिक गतिविधियां, मादक पदार्थों का दुरूपयोग तथा यौन व्यवहार से संबंधित अनेक गतिविधियों सम्बन्धित व्यवहार प्रतिमान की स्थापना करते हैं। किशोरावस्था भविष्य की नेतृत्वकर्ता है। यह अवस्था मनुष्य की रचनात्मकताओं, महत्वकांक्षाओं, इच्छाओं, जिज्ञासाओं तथा उत्सुकताओं आदि को प्रफुल्लित करने व उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सहायक हैं। युनिसेफ के अनुसार 'विश्व में लगभग 1.2 बिलियन किशोर आबादी है विश्व में हर 6 व्यक्तियों में से एक किशोर है, जो कि (10 वर्ष से 19 वर्ष) की आयु वर्ग के मध्य का है।'[2]

भारत दुनिया में सबसे बडी किशोर आबादी वाला देश है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार 'लगभग 253 मिलियन जो देश की कुल आबादी का 21% है, भारत में हर पांचवा व्यक्ति किशोर है'[3] भारत में किशोरों की यह जनसंख्या कई देशों कुल जनसंख्या से अधिक है तथा कुछ राष्ट्रों की कुल जनसंख्या के यथा जापान, जर्मनी और स्पेन आदि की संयुक्त जनसंख्या के बराबर है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार 'किशोर राजस्थान की कुल आबादी का 22.89 प्रतिशत है।'[4] इसका लगभग आधा भाग किशोरियों का है। किशोरावस्था जो संक्रमण काल है, में इन्हें इस काल में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

किशोरियों के स्वास्थ्य के शारीरिक आयाम–मनुष्य यदि अपने जीवन को अर्थ प्रदान करना चाहता है तो उसे स्वास्थ्य की दृष्टि से अपने–आपको

शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक रूप से व्यवस्थित करना होता है। परन्तु यह एक विडम्बना ही है कि मनुष्य बहुत अधिक धन को अर्जित करता है परन्तु सबसे कम अपने स्वास्थ्य पर ही खर्च करता है। इस भाग दौड़ के जीवन में अपने स्वास्थ्य पर कम से कम ध्यान दे पाता है। इस दृष्टि से किशोरियां भी पिछे नहीं हैं वे भी अपने स्वस्थ्य पर कम से कम ध्यान दे पाती हैं और वे शारीरिक दृष्टि से कमजोर रह जाती है। यह वह काल होता है जिसमें उनका सर्वाधिक विकास होता है परन्तु इनका उचित विकास नहीं हो पाता है। यह निम्न समस्याओं से रूबरू होती हैं।

किशोरावस्था के दौरान किशोरियों के शारीरिक विकास के साथ उनके मनोभावों में परिवर्तन होता है। सभी किशोरियों में ये परिवर्तन एक साथ न आकर अलग-अलग समय में आते है। कुछ किशोरियों में ये 12 वर्ष की आयु में तो कुछ में इस आयु के पूर्व या पश्चात आते है।यह एक ऐसा समय होता है जब किशोरियों के शरीर में बहुत सारे बदलाव यथा शारीरिक, मानसिक वैचारिक जैसे अनेक बदलाव देखने को मिलते हैं वहीं दूसरी ओर नये दोस्त बनाना, विभिन्न गतिविधियों में रूचि बढना, बडी कक्षाओं में जाना आदि एक साथ हो रहे होते हैं । इसी समय माता-पिता, शिक्षक व नातेदार आदि द्वारा भी किशोरियों को छोटी बच्चियां नहीं समझ कर उन्हें जिम्मेदारी वाले कार्य सौंपते है। इस दौरान लडकियों की समझ में भी वृद्धि होने लगती है। तथा किशोरियों को सब कुछ नया सा लगने लगता है। इस समय किशोरियों को अपने शरीर, विकास और आस-पास वातारण से जुडे कई मुद्दों के बारे में भी जानकारी की आवश्यकता होती है। अत: लडकियों की इस बढती उम्र के दौरान, उनके लिए जरूरी एवं महत्वपूर्ण माने जाने वाले मुद्दों के बारे में शोधकर्त्ता अपना अध्न करना चाहता है।

किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन -किशोरियों में शारीरिक बदलाव एक बडी चुनौती है। इस समय शरीर बचपन से अलग, ज्यादा विकसित होने लगता हैं। इस समय मानव शरीर में यौवन शुरू होता है। लडकियों की उम्र बढने के साथ इनके शरीर में यौन अंग बडे होने लगते है तथा हार्मोन का उत्पादन शुरू हो जाता है। मासिक धर्म शुरू हो जाता है। शारीरिक बदलाव के साथ-साथ आस-पास के माहौल में भी परिवर्तन आने लगता है। तथा किशोरियों पर पांबदी लगा दी जाती है। क्योंकि जैसे-जैसे लडकियों की उम्र बढती जाती है। माता-पिता व शिक्षक उनकी सुरक्षा के बारे में चिंतित होने लगते हैं। बढती हुई उम्र में एक बडा बदलाव मासिक धर्म का शुरू होना है। अधिकतर लडकियों को ये पता नहीं होता है। कि उनके शरीर को क्या हो गया है। क्योंकि इस बारे में किसी नें उन्हे कुछ नही बताया। लडकियां मासिक धर्म शुरू होने से डर सकती हैं या रोमांचित भी हो सकती हैं।

शरीर की देखभाल - किशोरावस्था में शरीर की अच्छी तरह देखभाल की आवश्यकता होती है। जैसे किशोर के शरीर में अधिक पसीना आना जिस कारण से शरीर को नियमित रूप से देखभाल व शरीर को साफ करने की आवश्यकता होती है।

माता-पिता की सलाह - किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का एक ऐसा समय है जहां किशोर माता-पिता के सन्दर्भ में संक्रमण काल के दौर से गुजरता है। माता-पिता द्वारा दी जाने वाली सलाह को किशोर सहस्र स्वीकार कर ले आवश्यक नहीं है। इस रूप में माता-पिता व किशोर दोनों के सामने अनेक समस्याऐं आती है। जिसके कारण किशोर तनावपूर्ण जीवन यापन करने को मजबूर हो जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या - किशोरावस्था में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती है जो कि आचरण, विकार, चिंता, अवसाद के साथ यौन व्यवहार में भी परिवर्तन का कारक हो सकते है। इसलिए सामाजिक कौशल व आत्मविश्वास के द्वारा मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ किया जा सकता है। इसके साथ ही किशोरावस्था में कुपोषण की समस्या, हिंसा, मादक पदार्थों का सेवन, यौन व प्रजनन स्वास्थ्य की समस्या।

किशोरावस्था में कुपोषण- कुपोषण का अर्थ है उचित पोषण का अभाव अर्थात् भोजन में आवश्यक पोषक तत्वों का अभाव जो कि सम्पूर्ण विकास को प्रभावित करते है। जिनके अभाव में शरीर अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है। कुपोषण चाहे किसी भी प्रकार का हो, यह हमेशा हानिकारक होता है। इसका शिकार व्यक्ति किसी भी आयु में हो सकता है परन्तु इससे सर्वाधिक प्रभावित महिलाऐं, बच्चे और किशोर आयु समूह होता हैं। किशोर आयु समूह में भी किशोरियां अधिक प्रभावित होती हैं क्योंकि किशोरियों में इस समय मासिक धर्म की शुरूआत होती है, हार्मोनल बदलाव आते है,द्वितीयक शारीरिक लक्षणों का विकास होता है। जिसके कारण किशोरियों को अत्यधिक मात्रा में पोषक तत्वों से युक्त संतुलित आहार की आवश्यकता होती है परन्तु समाज में महिलाओं को दोयम दर्जा प्राप्त है अत: किशोरियों का कुपोषित होना पूरे समाज के लिय दुष्प्रभावकारी है क्योंकि किशोरियां आने वाले कुछ वर्षों में गर्भधारण करती है, बच्चे को जन्म देती है। 'संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 23.3 प्रतिशत महिलाओं की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो जाती है। जिसके कारण भारत में इन विवाहित किशोरियों में प्रति एक हजार महिलाओं में से 43 महिलाऐं बच्चों को जन्म देती है।'[5]

नेशनल फेमिली हेल्थ-5 के आकडों के अनुसार 2021 में किशोरियों के गर्भधारण में 01 प्रतिशत गर्भधारण में गिरावट आयी है। जो दर्शाता है कि किशोरियों के सशक्तिकरण के कारण सम्भव हुआ है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार इन अवाछित गर्भधारण के पीछे जिम्मेदार कारकों में-

1. इन्टरनेट पर उपलब्ध अश्लील सामग्री
2. ए श्रेणी की वेब सीरिज
3. बलात्कार की घटनाएं
4. सोशल मिडिया

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में 13 प्रतिशत किशोरियां गर्भवती होती हैं साथ ही 20 वर्ष की उम्र में 40 प्रतिशत किशोरियां दूसरी बार गर्भवती होती है। जिसका प्रतिकूल प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पडता है। जिससे उनके शरीर में खून की कमी होती है। भारत में एन.एफ.एच.एस.रिपोर्ट-3 के आंकडों के अनुसार 56 प्रतिशत तक किशोरियां एनिमिया से ग्रसित है। इनमें से 1/3 प्रतिशत किशोरियां मध्यम अवस्था तीव्र अवस्था में के एनिमिया की शिकार है। किशोरियों मे बडी संख्या में कुपोषण का कारण भोजन की कमी है। जिसके कारण वे जल्दी ही बीमारियों कि शिकार हो जाती है। साथ ही लगभग आधी किशोरियों का वजन उनकी उम्र व उंचाई के अनुपात में कम है साथ ही हम देखते है कि कुछ किशोरियों में मोटापा भी देखने को मिलता है जिसका कारण जंक-फूड है।

किशोरावस्था एवं मानसिक स्वास्थ्य-किसी भी मनुष्य के लिए न केवल शारीरिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण माना जाता है बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। चूंकि किशोरावस्था बचपन व युवावस्था के मध्य संक्रमण

काल है इस काल में किशोरियां तीव्र गति से वृद्धि होती है एवं साथ ही हार्मोनल परिवर्तन होता है। इस अवस्था में किशोर पढाई के अत्यधिक दबाव व तनाव के कारण अवसाद में आ जाते है। जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। किशोरियां अधिक संवेदनशील होने के कारण जल्दी तनाव में आ जाती हैं। हाल ही में आई कैम्ब्रिज–ऑक्सफोर्ड एवं नीदरलैण्ड यूनिवर्सिटी की संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि किशोरियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव जल्दी पडता है। वर्तमान में सोशल मीडिया युवाओं पर अत्यधिक प्रभाव डाल रहा है जिसके कारण उनकी मानसिक स्थिति परिवर्तित हो रही है। मानसिक स्थिति के प्रभाव के कारण उनके व्यवहार में प्रभाव परिलक्षित होते हैं जैसे तनाव,अवसाद यादाश्त का कम होना, आदतों में बदलाव हो रहे है। इस अध्ययन के अनुसार जो किशोर– किशोरी सोशल मीडिया पर नियमित 3 घण्टे बिताते है। वयस्क होने पर वे ज्यादा असंतुष्ट नजर आते हैं।

सोशल मीडिया का 11 वर्ष की किशोरियों व 14 वर्ष के किशोरों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव पडता है। क्योंकि किशोरियां अधिक संवेदनशील होती है। इसलिए नकारात्मक प्र भाव अधिक पडता है.वे नकारात्मक शब्दों जैसे– LOSER, HATE YOU, DISLIKE आदि का प्रयोग अधिक करते है। इन नकारात्मक शब्दों को जल्दी से भुला नहीं पाती हैं। जिसका प्रभाव उनके सम्पूर्ण स्वास्थ्य पर पडता है। जिसमें मुख्य रूप से निंद में कमी, एकाग्रता में कमी, चिडचिडापन, तनाव आदि रोग बढने की संभावना होती है। इसके साथ ही किशोरों में एकांकी प्रवत्ति के कारण वे अपना अधिकतर समय सोशल मीडिया पर अधिक व्यतीत करते है। जिससे अवांछित घटनाओं की दर बढ जाती है। जिसमें मुख्य रूप से मोंबाईल गेम, चेटिंग अपराधिक प्रवृत्तियां बढ रही है। वर्तमान में कोविड–19 के कारण सम्पूर्ण प्रकार की गतिविधियां ऑन–लाईन संचालित होने से किशोरों में इसका ओर प्रभाव बढ गया है जिसके कारण किशोर एक पल भी इससे दूर नहीं होना चाहते है।

सतिया,जय के अनुसार 'किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए चुनौतियां: क्या आवश्यक है ?'[6] लेखक जय सतिया ने इंडियन जर्नल ऑफ कम्यूनिटि मेडिसिन पत्रिका के संपादकीय में लेख किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए चुनौतियां: क्या आवश्यक है ? पर प्रकाश डाला है। इसमें किशोरावस्था की चुनौतियों को बताया गया है जिसमें उभरते हुए किशोर स्वास्थ्य के मुद्दे यथा– ग्रीवा केंसर, शरीर की छवि, सिगरेट, मदिरा–पान, जंकफूड, भारी स्कूल बैग आदि, जिसमें 10 से 19 वर्ष के किशोरों में होने वाले मृत्यु का दुसरा बडा कारण HIV / AIDS व एड्स से जुडे कारणों को माना गया है। 2005 से 2016 के बीच किशोरावस्था में एचआईवी के मामलों में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साथ ही एड्स से संबंधित बीमारियों के कारण मरने वाले किशोरों की संख्या में 2000 से 2015 के बीच तिगुनी वृद्धि हुई है। यह किशोर वर्ग एक मात्र ऐसा समूह है जिसमें एड्स से जुडे मामलों में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गई है। साथ ही किशोर गर्भधारण से मातृ मृत्यु दर और रूग्णता का खतरा भी अधिक रहता है। वैश्विक स्तर पर किशोर जन्म दर 1990 में प्रति 1000 जन्म में से 65 जन्म है। जो 2015 में प्रति 1000 जन्म में से 45 जन्म है। जो 20 अंकों के सुधार को दर्शाता है। विश्व में हर वर्ष 2.5 मिलियन किशोरियां मां बनती है। यह गर्भावस्था एवं प्रसव से जुडी जटिलताऐं किशोरियों की मृत्यु का एक प्रमुख कारण है एवं मादक पदार्थो का सेवन किशोरावस्था की एक प्रमुख समस्या बनकर उभरा है। साथ ही वर्तमान समय में किशोरों में चोट/दुर्घटना में मृत्यु भी अधिक है। अत: किशोर केन्द्रित कार्यक्रम एवं नितियों के निर्माण पर अधिक निवेश करना चाहिए। इसके लिए भी भारत में अनेक कार्यक्रम बनाये गये है। जैसे जनसंख्या और विकास, प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य कार्यक्रम 1997, परिवार कल्याण कार्यक्रम, किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन 2005 साथ ही 2013 में किशोर कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम को सम्मिलित करते हुए राष्ट्रीय किशोर कार्यक्रम को लागू किया गया है। जिसमें किशोर स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के अंतर्गत पोषण, यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, लिंग आधारित हिंसा, मादक द्रव्यों का सेवन आदि शामिल है। इस प्रयोजन के लिए किशोर स्वास्थ्य क्लिनिक बनाये गये है। जहां पर प्रजनन स्वास्थ्य की जानकारी एवं परामर्श प्रदान की जाती है। मासिक धर्म संबंधी स्वच्छता सेवाएं, स्कूली स्वास्थ्य के माध्यम से सेनैट्री नेपकिन और निवारक स्वास्थ्य जांच आदि शामिल है। इन सब में एक विशिष्ट लक्ष्य किशोरों मे खून की कमी को कम करने का रखा गया। इन सभी योजनाओं एवं कार्यक्रमों के फलस्वरूप महिलाओं में औसत शादी की उम्र 16.6 से बढकर 19.4 वर्ष हो गई है। जो किशोरियों की स्थिति में सुधार को दर्शाता है।

इन सभी कार्यक्रमों एवं नीतियों के बावजूद भी किशोरियों में पोषण की स्थिति लगभग अपरिवर्तित रही है। किशोरियों में बॉडी मॉस इंडेक्स 1998–99 में 38.8 प्रतिशत से बढ कर 2015–16 में 41.9 प्रतिशत हो गया है। वहीं एनिमिया 15–19 आयु वर्ग की किशोरियों में 1998–99 में 56 प्रतिशत से बढ कर 59.1 प्रतिशत हो गया। अन्य स्वास्थ्य समस्याओं जैसे तम्बाकु पदार्थों का सेवन लडको में 2005–06 में 28.6 प्रतिशत एवं लडकियों में 3.5 प्रतिशत था। इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम 2014 में शुरू किया गया। जिसमे किशोरों के 7 घटकों को शामिल किया गया है। जिसमें समुदाय आधारित स्वास्थ्य संवर्धन और निवारक, नैदानिक को मजबूत करने के साथ–साथ रोकथाम और स्वास्थ्य सुविधाओं के स्तर पर उपचारात्मक सेवायें प्रदान करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट, 1948
2. UNICEF (2011) Opportunity in Crisis: Preventing HIV from Early Adolescence to Young ADULTHOOD. United Nation's Children's Fund (UNICEF), UNICEF, New York, 1-68.
3. Progress for children: A Report card on adolescent socio demographic profile of adolescents :November 10April 2012, UNICEF, page 6 (internet)avalable from :http://www.unicef org/publication /files /progress -for -children —No-10-EN-04232012pdf.
4. CENSUS India, 2011
5. UNICEF June,2020, STRATEGY FOR ENDING VIOLENCE AGAINST CHILDREN 4
6. UNFPA Report
7. Satia J. (2018). Challenges for Adolescent Health Programs: What is Needed?. *Indian journal of community medicine : official publication of Indian Association of Preventive & Social Medicine*, *43*(Suppl 1), S1–S5. https://doi.org/10.4103/ijcm.IJCM_331_18

****